मैरी कॉम – बॉक्सर

भारत के मणिपुर राज्य के हरे-भरे पहाड़ों के बीच, एक छोटे-से गाँव में, छोटी-सी मैरी कॉम का जन्म हुआ। उनके घर की दीवारें मिट्टी की थीं, छत फूस की थी, पर मैरी की आँखों में आसमान जितने बड़े सपने चमकते थे।

बचपन से ही मैरी को दौड़ना, खेलना और खुली हवा में साँस लेना पसंद था। एक दिन, उन्होंने टीवी पर बॉक्सिंग देखी, और तभी दिल में एक आग-सी जल उठी। उस दिन से, उनके सपनों में बॉक्सिंग की रिंग और मुक्कों की आवाज़ें गूँजने लगीं।

शुरुआत आसान नहीं थी। उनके पास अच्छे ग्लव्स नहीं थे, जूते फटे थे, फिर भी मैरी हर सुबह सूरज की पहली किरण के साथ दौड़ पड़ती। रास्ते में लोग कहते, "लड़कियाँ मुक्केबाज़ नहीं बन सकतीं, मैरी!" हर विरोध की आवाज़, हर चुनौती की आँधी उन्हें और मज़बूत करती गई।

एक दिन, उन्होंने गाँव की एक छोटी प्रतियोगिता जीती। पहली बार लोग हैरानी से देखने लगे—उनकी आँखों में विश्वास चमक उठा। मैरी के गाँव की कच्ची सड़कों से शुरू हुई कहानी अब दुनिया के मंचों तक पहुँचने लगी।

मैरी कॉम ने एक, दो नहीं, पूरे छह बार विश्व चैंपियन का खिताब अपने नाम किया। 2012 में, लंदन के ओलंपिक की रिंग में, उन्होंने जब अपने मुक्कों से ब्रॉन्ज़ मेडल जीता, तब भारत की मिट्टी गर्व से मुस्कुराई। मैरी तीन बच्चों की माँ भी बनीं, पर उनकी हिम्मत कभी कम नहीं हुई।

वह अक्सर कहती हैं, "माँ बनकर भी, हर सपना जीता जा सकता है!" मैरी कॉम की कहानी सिर्फ जीत की नहीं, बल्कि उम्मीद की है। वह एक मिसाल हैं कि इरादों की ऊँची उड़ान के आगे गरीबी की बेड़ियाँ, मुश्किलों के तूफ़ान और लोगों की बातें — सब छोटे पड़ जाते हैं।

उनकी जिंदगी बताती है—
"अगर सपनों की जड़ें मजबूत हों, तो
आसमान भी झुककर तुम्हें सलाम करता है।"

READ MORE STORIES ON
www.bharatkibetiyokikahaniyaan.com/

https://bharatkibetiyokikahaniyaan.com/
https://bharatkibetiyokikahaniyaan.com/